हम विदेशी मानसिकता से कब होंगे स्वतंत्र ? 9

उद्योग प्रधान था अपना देश 11

भारत का 'सूचिका भेदन' ही है एक्यूपंक्चर 12

पाक्षिक

पाथेय कण

₹ 10

www.patheykan.com

चैत्र पूर्णिमा, वि.2079, युगाब्द 5124, 16 अप्रैल, 2022

पूर्व नियोजित साजिश थी करौली में हिंसा

दंगाइयों द्वारा आगजनी

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

कथन

कश्मीरी पंडित अगले वर्ष कश्मीर लौटने का लें संकल्प

'' कश्मीरी पंडितों को अगले वर्ष अपनी मातृभूमि में बसने का संकल्प लेना चाहिए। उन्हें इस तरह से बसना चाहिए कि वे भविष्य में कभी भी वहां से फिर न उजड़ें। कोई विस्थापित करने की हिम्मत न करे। चरमपंथ के कारण कश्मीर छोड़ दिया, लेकिन अब लौटेंगे तो अपनी सुरक्षा और आजीविका के आश्वासन के साथ, हिंदू और भारत भक्त के रूप में वापस जाएंगे। ''

– डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

(3 अप्रैल,2022– कश्मीरी पंडितों को उनके नवरेह उत्सव पर संबोधित करते हुए)

हमारा कोई विरोधी नहीं

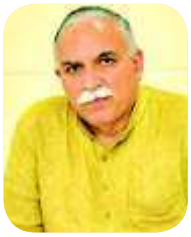

'' हमारा कोई विरोध कर सकता है लेकिन हमारा कोई विरोधी नहीं है। हमने समाज में दो ही तरह के लोगों को माना है, एक वो जो संघ में आ गए, एक वो जिनका संघ में आना बाकी है। इसके अलावा कोई नहीं है। ये हमारा कन्विक्शन है और हम इसी कन्विक्शन के आधार पर काम कर रहे हैं। ''

– अरुण कुमार, सह सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ

(पुस्तक : Conflict Resolution - The RSS Way के लोकार्पण समारोह में, 25 मार्च,2022 नई दिल्ली)

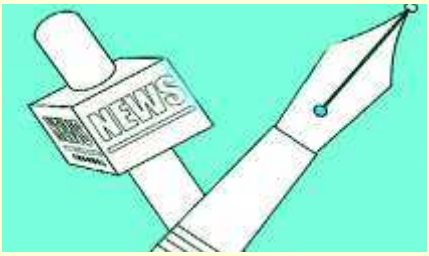

3 मई

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस

विश्व स्तर पर प्रेस की आजादी को सम्मान देने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 3 मई, 1993 को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया। वर्ष 1991 में अफ्रीकी पत्रकारों ने प्रेस की आजादी के लिए एक अभियान छेड़ते हुए 3 मई को प्रेस की आजादी के सिद्धान्तों को लेकर एक बयान जारी किया जिसे 'डिक्लेशन ऑफ विंडहोक' के नाम से जाना जाता है। इसकी स्मृति में 2 वर्ष पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ ने यह दिवस घोषित किया।

8 मई

विश्व रेडक्रॉस दिवस

रेडक्रॉस संगठन के संस्थापक जीन–हेनरी डुनोंट के जन्म दिवस 8 मई को यह दिवस मनाया जाता है। उन्हें शांति का प्रथम नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

घायलों व बीमार लोगों की सहायता करने, रक्तदान को प्रोत्साहित करने जैसे कार्य रेडक्रॉस संगठन विश्व भर में करता है।

11 मई

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

(नेशनल टेक्नोलॉजी दिवस)

अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में भारत ने दूसरा सफल परमाणु परीक्षण 11 मई, 1998 को किया था। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इसे बड़ी उपलब्धि माना गया। अतः इस दिन को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के रूप में मनाया जाता है। पूर्णतया स्वदेशी एयरक्राफ्ट 'हंस 3' ने भी इसी दिन उड़ान भरी तथा भारत की 'त्रिशूल' मिसाइल का सफल परीक्षण इसी दिन किया गया।

जन्मदिवस पर शतशत नमन

सिखों के दूसरे गुरु
गुरु अंगद देव
वैशाख शु .1(1 मई)

(1504–1552)

समाज सुधारक
संत बसवेश्वर
वैशाख शु.3 (3 मई)

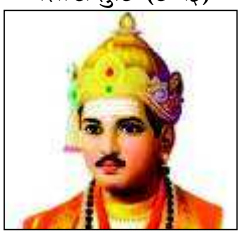

(1105–1167)

विश्वविख्यात कवि व साहित्यकार
रवीन्द्र नाथ ठाकुर
7 मई

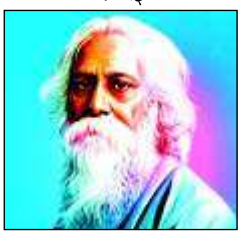

(1861–1941)

प्रसिद्ध क्रांतिकारी
सुखदेव
15 मई

(1907–1931)

पाक्षिक
पाथेय कण

चैत्र पूर्णिमा से वैशाख अमावस्या
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

16-30 अप्रैल, 2022
वर्ष 38 : अंक 02

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹ 150/-
पन्द्रह वर्ष ₹ 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)

- सम्पर्क -
संपादन : 94143 12288
प्रबंध : 99297 22111
प्रेषण : 86192 73491

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

राजस्थान का उद्घाटन तो वर्ष प्रतिपदा पर हुआ था

30 मार्च को राजस्थान दिवस मनाने का क्या है औचित्य ?

राजपूताना (राजस्थान के लिए पूर्व में प्रचलित नाम) की कुल 19 रियासतों, 3 ठिकानों एवं अजमेर- मेरवाड़ा (अंग्रेजों द्वारा सीधी तौर पर शासित प्रदेश) का एकीकरण कर राजस्थान राज्य का गठन किया गया था। राजस्थान का एकीकरण 7 चरणों में हुआ। यह प्रक्रिया 17-18 मार्च,1948 से प्रारम्भ हुई थी जो 1 नवम्बर, 1956 तक चली।

चौथे चरण में जिस 'वृहद राजस्थान' का गठन किया गया था, उसी के उद्घाटन दिन को 'राजस्थान दिवस' के रूप में मनाया जाता है, यद्यपि उस समय तक 'वृहद राजस्थान' में मत्स्य संघ (अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली), सिरोही, अजमेर, आबू, देलवाड़ा जैसे क्षेत्र शामिल नहीं थे, जो बाद की तारीखों में 'वृहद राजस्थान' में शामिल किए गए। अजमेर 1956 तक केन्द्र शासित प्रदेश बना रहा। कहा जाता है कि वृहद राजस्थान का उद्घाटन 30 मार्च को हुआ। परन्तु क्या वस्तुतः वृहद राजस्थान का उद्घाटन करने के लिए 30 मार्च का चयन किया गया था? इसका उत्तर है- 'नहीं'।

वृहद राजस्थान का उद्घाटन किसी शुभ दिन पर होना तय हुआ था। वह शुभ दिन था- वर्ष प्रतिपदा का दिन, भारतीय नववर्ष-नव संवत्सर का प्रथम दिन। बाकायदा मुहूर्त निकालकर उद्घाटन किया गया था। उद्घाटन चैत्र शुक्ल एकम् (वर्ष प्रतिपदा) संवत् 2006 को प्रातः 10.14 बजे रोहिणी नक्षत्र इन्द्र योग में किया गया। हां, उस दिन संयोग से 30 मार्च था। इस बात की पुष्टि सरदार वल्लभ भाई पटेल के उस भाषण से भी होती है जो उन्होंने 'वृहत्तर राजस्थान' के उद्घाटन अवसर पर दिया था। **श्री वल्लभ भाई पटेल ने अपने भाषण का समापन निम्नांकित पैरा से किया-**

> **''राजपूताना में आज नए साल का प्रारंभ है। यहाँ आज के दिवस साल बदलता है। शक बदलता है। यह नया वर्ष है। तो आज के दिन हमें नए महा-राजस्थान के महत्व को पूर्ण रीति से समझ लेना चाहिए। आज अपना हृदय साफ कर ईश्वर से हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें राजस्थान के लिए योग्य राजस्थानी बनाए। राजस्थान को उठाने के लिए, राजपूतानी प्रजा की सेवा के लिए, ईश्वर हमको शक्ति और बुद्धि दे। आज इस शुभ दिन हमें ईश्वर का आशीर्वाद माँगना है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप सब मेरे साथ राजस्थान की सेवा की इस प्रतिज्ञा में, इस प्रार्थना में, शरीक होंगे। जय हिन्द।''**

स्पष्ट है कि उनके भी मन-मस्तिष्क में उद्घाटन का दिवस वर्ष प्रतिपदा ही था, न कि 30 मार्च। उन्होंने अपने भाषण में एक बार भी '30 मार्च'का उल्लेख नहीं किया।

अतः उचित यही होता कि 'राजस्थान-दिवस' वर्ष प्रतिपदा के दिन ही मनाया जाता। यह ऐतिहासिक और परम्परागत दृष्टि से भी उचित है। प्रभु राम, युधिष्ठिर, प्रतापी राजा विक्रमादित्य, शक-हूणों पर विजय प्राप्त करने वाले शालिवाहन- इन सबने अपने शासन की शुरुआत, अपना राज्याभिषेक वर्ष प्रतिपदा को ही किया था, आज भी उनके राज्याभिषेक का स्मरण इसी दिन किया जाता है। छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को हुआ था। संपूर्ण भारत में इसी तिथि को यह दिवस मनाया जाता है। भले ही उस दिन 6 जून की तारीख रही होगी।

नववर्ष समारोह समिति, जयपुर ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से आग्रह किया है कि राजस्थान-दिवस 30 मार्च के बजाय वर्ष प्रतिपदा को मनाया जाए। समिति की मांग पूर्णतया उचित ही है और ऐसी घोषणा करके गहलोत जी भी अवश्य यश के भागी बनेंगे।

- रामस्वरूप अग्रवाल

ज्ञान गंगा

अर्थेभ्यो हि वृद्धेभ्यः संवृत्तेभ्यस्ततस्ततः।
प्रवर्त्तन्ते क्रियाः सर्वाः, पर्वतेभ्य इवापगाः।।

(पंचतंत्र/मित्रभेद-6)

यदि धन की वृद्धि हो जाए, तो उसे अच्छे कार्यों में लगा देना चाहिए। इससे शुभ कार्य ठीक उसी प्रकार से होने लगते हैं, जिस प्रकार पर्वतों से नदियाँ बहने लगती हैं।

पूर्व नियोजित साजिश थी करौली में हिंसा

राजस्थान के करौली नगर में भारतीय नववर्ष पर निकाली जा रही वाहन रैली पर पथराव तथा लाठी, तलवार, सरिए व चाकुओं से हमला करने की वारदात पूर्व निर्धारित और सोची समझी साजिश थी। इसके प्रमाण सामने आ रहे हैं। पुलिस व प्रशासन को कई घरों की छतों पर पत्थरों के ढेर मिले हैं। सांसद मनोज राजोरिया बताते हैं, ''मैंने कलेक्टर व एसपी के साथ घटनास्थल का निरीक्षण किया। वहां कई मकानों पर पत्थरों के ढेर मिले। मकानों से लगभग दो ट्रॉली पत्थर निकाले गए।''

पूर्व नियोजित षड्यंत्र

करौली में भगवा रैली पर हुआ आक्रमण 2020 में हुए दिल्ली दंगों की तर्ज पर ही था। सूत्र बताते हैं कि करौली नगर में माहौल बिगाड़ने का षड्यंत्र कई दिनों से रचा जा रहा था। पुलिस को भी अवश्य भनक रही होगी क्योंकि इस कायराना हमले से दो दिन पूर्व शुक्रवार (1 अप्रैल) को इस्लामिक कट्टरपंथी संगठन पीएफआई (पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया), राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष मोहम्मद आसिफ ने एक बयान जारी कर बताया था कि हिंदू नववर्ष पर निकाली जाने वाली रैली के दौरान भड़काऊ नारे लगने की आशंका है जिससे माहौल बिगड़ने की संभावना है।

स्पष्ट था कि पीएफआई का यह बयान पीड़ितों को ही दोषी ठहराने की कवायद थी। दंगों के बाद उसी मोहम्मद आसिफ ने हिंदुओं की वाहन रैली पर पथराव व आक्रमण को यह कहकर उचित ठहराने की कोशिश की, कि आरएसएस और उसके सहयोगी संगठनों द्वारा मुस्लिम बहुल इलाकों से रैली निकाल भड़काऊ नारे लगाए गए।

करौली में बाइक रैली पर पथराव के बाद जयपुर में हिंदूवादी संगठनों ने किया विरोध-प्रदर्शन

क्या वंदेमातरम् और भारत माता की जय या जय श्रीराम का नारा भड़काऊ है? मोहम्मद आसिफ को इसे स्पष्ट करना चाहिए। प्रश्न यह भी है कि रैली केवल मुस्लिम बहुल इलाकों से ही नहीं निकाली गई, रैली पूरे करौली कस्बे में निकाली जा रही थी। मुसलमानों का यह रूख कि हिंदुओं का कोई जुलूस या रैली मुस्लिम बहुल इलाकों से या मस्जिद के सामने से नहीं निकाला जावे, बहुत ही खतरनाक इरादे प्रकट करने वाला है। यह भारतीय नववर्ष था। इसके समारोह में यदि मुसलमान पथराव न कर शामिल होते तो एक भाईचारे का माहौल बनता। आम मुसलमान इसे ज्यादा पसंद करता परन्तु पीएफआई जैसे संगठन और कट्टरवादी मुस्लिम तत्व ऐसा होने नहीं देगा, ऐसा लग रहा है।

इरादे कुछ और थे

परन्तु पीएफआई व अन्य कट्टरपंथियों के इरादे कुछ दूसरे ही थे, सभी मकानों की छतों पर मोटे-मोटे पत्थर इकट्ठे कर रखे थे तथा लाठी, तलवार, सरिए और चाकुओं की व्यवस्था कर रखी थी। अचानक तो यह सब नहीं हो सकता कि कोई कहे-भड़काऊ नारे लगा रहे थे जी, इसलिए हमने भड़ककर पत्थर फेंके और हमला कर 40 लोगों को घायल कर दिया। दुकानों को जलाने की योजना भी अवश्य पूर्व में रही होगी।

मस्जिद पर हमले की झूठी खबरें

जिन्होंने उपद्रव का षड्यंत्र किया वे अब पीड़ित हिंदुओं के विरुद्ध ही पथराव व आगजनी के झूठे समाचार फैला रहे हैं तथा बता रहे हैं कि मस्जिद पर पथराव किया गया। पाकिस्तानी चैनलों पर भी ऐसी झूठी खबरें प्रसारित की गई। उन्हीं चैनलों की क्लिप वायरल की जा रही है।

सच आया सामने

भले ही राजस्थान सरकार ने इंटरनेट बंद कर दिया हो लेकिन समाचार पत्रों के माध्यम से सच सामने आ ही गया। दैनिक भास्कर (6 अप्रैल) ने मुख पृष्ठ पर शीर्षक दिया- ''पथराव के लिए एक घर में जमा थे 150 उपद्रवी, कई पुलिस की शांति बैठक में भी शामिल थे।'' अर्थात् वे 150 उपद्रवी कौन थे, इसकी कइयों को पहचान है। इसी समाचार पत्र में आगे लिखा है-''जुलूस पर

उपद्रव का नतीजा

- 1 मकान और 35 दुकानें जला दी गई
- 40 से ज्यादा लोग घायल हो गए
- 4 पुलिसकर्मी घायल हैं
- 1 गंभीर जयपुर आईसीयू में भर्ती है
- 30 से ज्यादा बाइक उपद्रवियों ने तोड़ दी

साभार- दैनिक भास्कर

पथराव के लिए पहले से एक पक्ष ने तैयारी कर रखी थी। करौली के हटवाड़ा बाजार के एक मकान में करीब 150 असामाजिक तत्व जमा थे। हटवाड़ा बाजार में जुलूस ने जैसे ही प्रवेश किया तो छतों से जुलूस पर पथराव शुरु हो गया। इसके बाद दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए।''

एक राजनेता का यह कहना सही है कि पीएफआई का छबड़ा समेत कई कस्बों में हिंदू समाज के विरुद्ध हुई वारदातों में भूमिका संदिग्ध पाई गई है, लेकिन अब तक राज्य सरकार ने इस संगठन के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की है।

उपद्रवियों की पूर्व सूचना दी गई थी

बताया जा रहा है कि जुलूस निकालने वालों ने पहले ही पुलिस व प्रशासन को सूचित कर दिया था कि मस्जिद और वहां मौजूद जिम में काफी लोग इकट्ठे हैं और अप्रिय घटना हो सकती है। पुलिस जांच करती और ड्रोन से सर्वे कराती तो छतों पर इकट्ठा किए गए पत्थरों के बारे में पता चल जाता।

दोषी व पीड़ित समान

जिन दुकानदारों की दुकानें जली हैं, वे बताते हैं कि पहले दुकानों को लूटा गया, फिर जलाया गया। पुलिस उनकी शिकायत तक दर्ज नहीं कर रही है और लूटपाट करने वालों के नाम तक बताने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। जुलूस में शामिल कुछ लोगों ने अपने बचाव के लिए प्रतिक्रिया में पथराव किया था। पहले हमला घरों की छतों से ही हुआ। पुलिस ने दोषी व पीड़ितों के साथ एक सा व्यवहार करते हुए कई पीड़ितों को भी गिरफ्तार कर लिया है।

आश्चर्य यह भी

आश्चर्य है कि प्रदेश के मुख्यमंत्री पत्थरबाजी व हिंसा के बचाव में उतर गए हैं। उन्होंने कहा है कि ''शोभायात्रा में डीजे बजाने और नारे लगाने से अशांति फैली है।''

क्या डीजे बजाना और नारे लगाना गैर कानूनी है? क्या इस कारण दंगाइयों को पथराव और हिंसा करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है?

हिंदू विरोधी सरकार

लोगों का मानना है कि राजस्थान की वर्तमान गहलोत सरकार आने के बाद प्रदेश में हिंदू समाज की अनदेखी की गई तथा जिहादी व उत्पाती तत्वों को संरक्षण दिया गया। चाहे छबड़ा में हिंदू दुकानों में लूटपाट व आगजनी का मामला हो या अलवर के योगेश की जिहादी भीड़ द्वारा हत्या का मामला हो, या फिर मेवात क्षेत्र में हो रहे मतांतरण, लव जिहाद व गोतस्करी तथा गोहत्याओं की बात हो या दलितों की भूमि पर जिहादियों और उत्पाती तत्वों द्वारा अवैध कब्जा करने का मामला हो, तुष्टीकरण की नीति के अंतर्गत उनका संरक्षण ही किया गया। हिंदू समाज आज भी इन सब व अन्य कई मामलों में राज्य सरकार से न्याय प्राप्त करने का इंतजार कर रहा है।

ताजा उदाहरण राज्य सरकार द्वारा 'रमजान के दिनों में मुस्लिम बहुल इलाकों में बिजली सप्लाई निर्बाध बनाए रखने' संबंधी आदेश जारी करने का है, जबकि इन्हीं दिनों में हिंदू समाज का एक बड़ा वर्ग भी नवरात्री के व्रत करता है और पूजा-पाठ में लीन रहता

...शेष पृष्ठ 9 पर

प्रत्यक्षदर्शी के बयान

हर तरफ से बड़े-बड़े पत्थर लोगों के ऊपर आकर गिरने लगे। ऐसा लग रहा था, जैसे आसमान से पत्थर बरस रहे हों। अफरा-तफरी में कुछ नकाबपोश लोग हाथों में लाठियां, तलवार, सरिए व चाकू लेकर आए और लोगों पर हमला कर दिया।

वीपी शर्मा, चश्मदीद

साभार- दैनिक भास्कर

पाली में त्रिवेणी संगम

भारतीय नववर्ष- नव संवत्सर पर हुए प्रभावी कार्यक्रम

राजस्थान के विभिन्न शहरों, कस्बों और गांवों से भारतीय नववर्ष–नव संवत्सर के अवसर पर अनेक प्रकार के प्रभावी कार्यक्रम किए जाने के उत्साहवर्धक समाचार लगातार प्राप्त हुए हैं। कहीं प्रभात फेरी, जुलूस, वाहन रैली निकाली गई तो चौराहों पर भगवा पताकाएं लगाई गई, रंगोली सजाई गई, आमजन को तिलक लगाकर प्रसाद बांटा गया और भारत माता की आरती उतारी गई। संघ के स्वयंसेवकों ने पथ संचलन निकाला तो आर्य समाज और सिंधी समाज ने भी शोभायात्राएं निकाली। ये उल्लासमय कार्यक्रम इस बात के प्रतीक हैं कि समाज ने नववर्ष के नाते भारतीय नववर्ष को महत्व देना आरंभ कर दिया है भले ही राजकार्य के लिए अंग्रेजी नववर्ष मान्य हो।

भीलवाड़ा में 7 स्थानों से वाहन रैली

सातों वाहन रैलियां स्टेशन चौराहे पर सम्मिलित हुई। रैली में लोग केसरिया साफा पहने हुए थे भारत माता की सामूहिक आरती उतारी गई। पूरे शहर को भगवा झंडियों से सजाया गया था। कई स्थानों पर आमजन को तिलक लगाकर मिश्री, काली मिर्च, धनिया, गुड़ का प्रसाद वितरित किया गया। शिवलिंग पर जलाभिषेक किया गया। चौराहों पर रंगोली सजाई गई। आर्य समाज की ओर से भी शोभायात्रा निकाली गई। जैन मंदिर में मंडप विधान पूजा हुई।

भीलवाड़ा

पाली में त्रिवेणी संचलन

पाली में संघ का भव्य त्रिवेणी पथ संचलन निकला। त्रिवेणी अर्थात् तीन अलग–अलग दिशाओं से रवाना होकर एक निश्चित समय पर संयुक्त होकर निकलता पथ संचलन। पथ संचलन को देखने और स्वागत करने के लिए मानो पूरा शहर ही उमड़ पड़ा था। लोग जगह–जगह डीजे पर नृत्य करते नजर आए। सड़कों के दोनों ओर खड़ी जनता भारत माता की जय, जय श्रीराम और वंदेमातरम् के घोष लगा रही थी। त्रिवेणी पथ संचलन के मिलन स्थान सूरजपोल पर प्रत्येक पथ संचलन 3.8 किमी. की दूरी तय करते हुए पहुँचा था।

जगह–जगह बालिकाओं ने रंगोली सजाई, भगवा झंडियों व झालरों से शहर अटा पड़ा था। शहर के प्रमुख साधु–संत संचलन के साथ चले। लोगों ने स्वागत में इतने फूल बरसाए कि रास्तों पर फूलों की परत सी बन गई। एक अनुमान के अनुसार 4 हजार किलो से अधिक फूलों का उस दिन उपयोग किया गया।

चित्तौड़ में कांग्रेस–भाजपा द्वारा स्वागत

चित्तौड़ में शहर के प्रमुख बाजारों से विशाल शोभायात्रा निकाली गई। राजस्थान में कांग्रेस सरकार के सहकारिता मंत्री उदयलाल आंजना सहित कई कांग्रेस जनों ने चित्तौड़ी गेट पर पुष्प वर्षा से शोभायात्रा का स्वागत किया तथा भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण किया। पूर्व मंत्री भाजपा के श्रीचन्द कृपलानी शोभायात्रा में पूरे समय उपस्थित रहे।

चित्तौड़गढ़

बीकानेर

मदनगंज (किशनगढ़

शोभायात्रा में सबसे आगे घुड़सवार ध्वज लेकर चल रहे थे। भारत माता, दयानन्द सरस्वती, ज्योतिबा फुले की झांकियां चल रही थीं, सैकड़ों की संख्या में महिलाएं केसरिया साफा तथा लोग केसरिया वस्त्रों में पंक्तिबद्ध चल रहे थे।

बीकानेर में 'माँ' लिखी आकृति बनाई

बीकानेर में सैकड़ों स्वयंसेवकों ने आसन, व्यायाम आदि का शारीरिक प्रदर्शन किया तथा 'माँ' के आकार की आकृति बनाते हुए मैदान में उपस्थित रहे।

भगवा रंग में रंगा बूंदी शहर

भगवा रंग में रंग गया पूरा शहर। हजारों लोग रैली में शामिल हुए। वाहन रैली में थे डेढ़ हजार से ज्यादा वाहन। पग-पग पर किया गया स्वागत। शाम को हुआ दीपदान। शहर में 100 स्वागत द्वार बनाए गए। **कारवार** (बूंदी) में भी निकाली गई वाहन रैली।

किशनगढ़ में रंगोली, आतिशबाजी

पूर्व संध्या पर वाहन रैली निकाली गई। चौराहों पर भारत माता का चित्र बनाया गया।

बूंदी

श्रीमाधोपुर

शाम को देशभक्ति के गीतों के साथ भारत माता की आरती उतारी गई। वर्ष प्रतिपदा पर शोभायात्रा निकाली जिसका जगह-जगह स्वागत हुआ। सिंधु समाज ने भी जुलूस निकाला। तांगा स्टैंड पर उनकी ओर से रंगोली बनाई गई तथा आतिशबाजी की गई। बैंड से वादन मुख्य आकर्षण रहा।

श्री माधोपुर में घोड़ों पर देवी रूप में बालिकाएं, ढोल-नगाड़ों से स्वागत

पूर्व संध्या पर युवा बाइकों पर केसरिया ध्वज लहराते हुए तथा घोड़ों पर बालिकाएं देवी रूप में थीं। लोगों ने ढोल-नगाड़ों से किया स्वागत।

पथ संचलन

जोधपुर में 18 नगरों का संयुक्त पथ संचलन का कार्यक्रम हुआ। जगह-जगह फूलों की वर्षा की गई। संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल ने समारोह को संबोधित किया। मेजर जनरल शेर सिंह विशिष्ट अतिथि रहे।

कोटा में 25 हजार दो पहियों की रैली

विराट भगवा रैली की गई आयोजित। रैली में कार्यकर्ता गण एक हाथ में तिरंगा और दूसरे हाथ में भगवा पताका लेकर जुटे। स्टेडियम में भारत माता की आरती हुई। रैली में डॉ.अंबेडकर, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, झांसी की रानी, जोरावर सिंह, वीर सावरकर तथा डॉ. हेडगेवार के चित्रों से सजे रथ भी थे।

रैली देखने भारी भीड़ जुटी। हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई। बग्घी में संतगण विराजमान थे। रैली में 25 हजार से ज्यादा दुपहिया वाहन थे। **बाली** में नववर्ष पर सुंदरकांड का पाठ मुख्य बाजार के हनुमान मंदिर में किया गया।

सोजत में क्रांतिकारियों का रूप धरा बालकों ने

निकाली गई शोभायात्रा के आगे सजे धजे घोड़ों पर भारत के क्रांतिकारियों का रूप धरे बाल कलाकार बैठे थे। सिर पर मंगल कलश धारण किए महिलाएँ भी थीं। दोनड़ी और करमावास में भी भगवा रैली निकाली गई।

बड़ीसादड़ी में मातृशक्ति की वाहन रैली

मातृशक्ति ने दुपहिया वाहनों पर भगवा साफे बांधकर तथा हाथों में शस्त्र लेकर निकाली रैली। 36 कौम के लोगों ने किया स्वागत। रास्ते में बिछाए गए कालीन, वितरित किया गया शीतल पेय जल। घरों की छतों से लोगों ने की पुष्प वर्षा। नगर पालिका अध्यक्ष मुस्तफा अली बोहरा व सभी पार्षदों ने भी की पुष्प वर्षा।

तालेड़ा-मुस्लिम समाज ने किया स्वागत

भारत माता पूजन के पश्चात् निकाली गई विशाल रैली का जावेद जेड, राहिन मलिक शाहरूख खान व असलम जेड सहित मुस्लिम समाज के अन्य लोगों ने भी किया स्वागत। कस्बा सजाया गया केसरिया झंडों से। हुई घट स्थापना। ●

उदयपुर

मां के तीन बेटे– तीनों ने ही स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर फांसी के फंदे को चूम लिया

क्रांतिवीर चाफेकर बंधु

● मनोज गर्ग

भयंकर रूप से फैले प्लेग की रोकथाम के उपायों के लिए अंग्रेज सरकार ने वॉल्टर चार्ल्स रैंड को कमिश्नर नियुक्त कर पुणे भेजा। पुणे आते ही उसने लोगों को महामारी से बचाने के बजाय नागरिकों पर अत्याचारों का सिलसिला प्रारम्भ कर दिया।

अंग्रेज सिपाही जूते पहन कर ही लोगों के पूजा गृहों और रसोई घर तक घुस जाते थे, विरोध करने पर लोगों को मारा-पीटा जाता, प्लेग के कीटाणुओं को खत्म करने के बहाने घरों में आग तक लगा दी जाती थी। सिपाहियों का महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार असहनीय हो चुका था।

बाल गंगाधर तिलक द्वारा इसकी आलोचना करने पर उन्हें जेल में डाल दिया गया। यह सब देखकर चाफेकर परिवार के तीन सगे भाइयों दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव का खून खौल उठा और उन्होंने कमिश्नर रैंड तथा उसके साथी आयर्स्ट को सबक सिखाने का निश्चय कर लिया। गोविंद विनायक रानाडे भी चाफेकर बंधुओं की योजना में शामिल थे।

महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के हीरक जयंती समारोह से लौटते समय रैंड को दामोदर ने गोली मार दी तथा उसका साथी आयर्स्ट बालकृष्ण की गोली का शिकार हुआ और सीधे यमलोक पहुँच गया। रैंड ने तीन दिन बाद अस्पताल में दम तोड़ दिया।

अंग्रेज सरकार को भारतीय देशभक्तों की यह सीधी चुनौती थी। यह भारत की आजादी की लड़ाई में प्रथम क्रांतिकारी धमाका था। पुणे की जनता चाफेकर बंधुओं की जय-जयकार कर उठी।

अंग्रेज सरकार ने चाफेकर बंधुओं को गिरफ्तार करवाने पर 20 हजार रुपये ईनाम देने की घोषणा की। गणेश शंकर द्रविड़ और रामचन्द्र द्रविड़ ने पैसे के लालच में आकर पुलिस को उनके छिपे होने की जानकारी दे दी। दामोदर पकड़े गए। 18 अप्रैल, 1898 को जब दामोदर चाफेकर को फांसी देने के लिए ले जाया जा रहा था, तब उनके हाथ में गीता थी। वे गीता पढ़ते हुए फांसी घर पहुँचे।

बालकृष्ण अभी फरार थे। पुलिस उन्हें रात-दिन यहाँ-वहाँ खोजने लगी। थक हार कर जब पुलिस उनका पता नहीं लगा पाई तो उन्होंने उनके घरवालों, रिश्तेदारों तथा स्थानीय लोगों पर अमानवीय अत्याचार शुरु कर दिए। बालकृष्ण ने अपने लोगों को यातना से बचाने के लिए समर्पण कर दिया। उन्हें 12 मई, 1899 को यरवदा जेल (महाराष्ट्र) में फाँसी दे दी गई।

तीसरे भाई वासुदेव चाफेकर (19 वर्षीय) और उसके मित्र गोविंद रानाडे ने पुलिस को सूचित करने वाले दोनों गद्दारों को अपनी बंदूक से मार गिराया और फिर गिरफ्तारी दी। इन दोनों देशभक्तों पर हत्या का मुकदमा चला और वासुदेव चाफेकर को 8 मई तथा गोविन्द रानाडे को 10 मई, 1899 को फांसी के फंदे पर लटका दिया गया।

इस प्रकार मां भारती को स्वतंत्र कराने के यज्ञ में तीनों भाइयों (दामोदर, बालकृष्ण व वासुदेव चाफेकर) ने अपने मित्र गोविंद रानाडे के साथ अपने प्राणों की आहुति दे दी।

(लेखक पाथेय कण के सह संपादक हैं)

जयपुर में नववर्ष पर डॉक्टर्स का सांस्कृतिक कार्यक्रम

जयपुर में डॉक्टर्स के संगठन एनएमओ द्वारा आयोजित स्नेह मिलन में लगभग साढ़े पांच सौ चिकित्सक एवं मेडिकल के विद्यार्थी उपस्थित थे। सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। स्वतंत्रता सेनानियों के वेश में बच्चों ने उनका ध्येय वाक्य भी बताया। छत्रपति शिवाजी ने अफजल खां को कैसे सबक सिखाया– इसका मंचन भी हुआ।

राष्ट्र सेविका समिति की अ.भा.बैठक सम्पन्न

हम विदेशी मानसिकता से कब होंगे स्वतंत्र?

हम व्यक्तिगत और पारिवारिक प्रयासों से हिंदू जीवन मूल्यों का संरक्षण करें– यह कहना है राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका शांता अक्का का। उन्होंने यह बात जयपुर में संपन्न सेविका समिति की अ.भा.कार्यकारिणी एवं प्रतिनिधि मंडल की बैठक में कही। शांता अक्का ने प्रश्न किया ''हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष का महोत्सव मना रहे हैं, फिर भी हम स्वतंत्र हुए क्या?'' उन्होंने कहा कि आज हम शासकीय दृष्टि से स्वतंत्र हुए हैं परन्तु विदेशी मानसिकता की परतंत्रता से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं, जिसके कारण आज अपने सामने कई सामाजिक प्रश्न खड़े हुए हैं।

बैठक के उद्घाटन सत्र में प्रमुख कार्यवाहिका सीता अन्नदानम ने देश में राष्ट्र सेविका समिति के कार्य की स्थिति एवं कुछ सामाजिक प्रश्नों के बारे में प्रतिनिधियों को जानकारी दी।

बैठक में तय किया गया कि हिंदू जीवन मूल्यों के संरक्षण व अपने सामने आने वाले सामाजिक प्रश्नों के समाधान हेतु नियमित शाखाओं का संचालन होना आवश्यक है।

बैठक में महिला स्वयं सहायता समूह के कामकाज की समीक्षा की गई तथा निम्न वर्ग की बालिकाओं को शिक्षा उपलब्ध करवाने, साहित्य व संस्कार केन्द्रों की स्थापना, आरोग्य शिविरों का आयोजन, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने सहित कई विषयों के संबंध में योजना बनाई गई। जनजातीय क्षेत्रों में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने और शाखाओं के विस्तार पर भी चर्चा हुई।

जयपुर प्रांत की सह प्रचार प्रमुख श्रीमती गुलशन शेखावत ने बताया कि बैठक में देशभर से 100 प्रतिनिधि सम्मिलित हुईं। सेविका समिति की वर्तमान में देश में लगभग साढ़े चार हजार शाखाएं प्रतिदिन लगती हैं तथा तीन लाख से ज्यादा मातृशक्ति सेविका समिति से जुड़ी हुई हैं।

राष्ट्र सेविका समिति, भारत में महिलाओं की एक संस्था है जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ही दर्शन और कार्य पद्धति के अनुरूप मातृशक्ति को संस्कारित कर राष्ट्र निर्माण के कार्य हेतु प्रेरित करती है।

इसकी स्थापना आरएसएस की स्थापना से 11 वर्ष पश्चात् 1936 में विजयादशमी के दिन वर्धा में हुई थी। श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर (मौसीजी) इसकी प्रथम प्रमुख संचालिका थीं। सेविका समिति का ध्येय सूत्र है– 'स्त्री राष्ट्र की आधारशिला है।'

राष्ट्र सेविका समिति की भी आरएसएस की शाखाओं जैसी शाखाएं प्रतिदिन या साप्ताहिक लगती हैं, जहाँ मातृशक्ति के बौद्धिक, मानसिक व शारीरिक विकास के लिए विविध कार्यक्रम होते हैं।

पृष्ठ 5 का शेष (करौली हिंसा...)

है। भले ही से विरोध होने पर राज्य सरकार ने इस आदेश को वापस ले लिया हो, परन्तु कांग्रेस नेताओं के मनों में क्या है– यह तो प्रकट हो ही गया। अजमेर में रामनवमी से तीन दिन पहले आदेश निकालकर धार्मिक प्रतीक चिह्न वाली झंडियों को लगाने पर रोक लगा दी गई है, जबकि रामनवमी पर हिंदू घरों में 'ऊँ' लिखी हुई झंडियां लगाने की परंपरा रही है। यानि अब 'ऊँ' लिखी हुई झंडियां लगाया जाना भी कांग्रेसी सरकार को सहन नहीं हो रहा।

अभी भी समय है कि राज्य सरकार जिहादी तत्वों को संरक्षण देने के बजाए हिंदू जनता के प्रति न्याय करे तथा दोषियों को कड़ा दण्ड दे अन्यथा समाज भी ऐसे लोगों को वैधानिक तरीके से सबक सिखाने में सक्षम है। ●

विश्वकल्याण का भाव ही भारत का मूल विचार

31 मार्च,2022 को उदयपुर में आयोजित 'बालासाहब देवरस व्याख्यानमाला' के अवसर पर तथा कोटा में वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह श्री सुरेश जोशी उपाख्य भैय्याजी द्वारा दिए गए उद्बोधनों के मुख्य अंश–

उदयपुर - विश्वकल्याण का भाव ही भारत का मूल विचार है और अब भारत को सामर्थ्यशाली बनने से कोई रोक नहीं सकता। विश्व का मानवता, धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में मार्गदर्शन भारत का दायित्व है, यदि भारत में धर्म सुरक्षित नहीं रहा तो विश्व में कहीं भी धर्म सुरक्षित नहीं रहेगा।

समाज को अज्ञानता व उदासीनता से बाहर निकालें

शक्तिशाली, सामर्थ्य सम्पन्न समाज के निर्माण से संस्कृति, मूल्य व धर्म की रक्षा होगी, इसके लिए समाज को अज्ञानता से बाहर निकालकर उदासीनता व स्वकेन्द्रित भाव से बाहर निकालकर दायित्वबोध कराने की आवश्यकता है। हिन्दू शक्तिशाली व सामर्थ्यशाली होने के बावजूद कभी आक्रामक नहीं रहा। समाज के पुरुषार्थ के आधार पर भारत की विजय सुनिश्चित है।

दायित्व बोध समझें

कोई भी राष्ट्र तभी सर्वशक्तिमान हो सकता है जब उसके नागरिक स्वयं अपना दायित्व बोध समझे। हम अपने घर को साफ रखना चाहते हैं लेकिन देश को साफ नहीं रखना चाहते। यही समस्या है। राष्ट्रवाद की भावना देश और समाज दोनों के प्रति हमारे दायित्वों से जुड़ी हुई है हम स्वयं के साथ राष्ट्र को भी मजबूत बनाएं। शक्तिशाली हमेशा कमजोर को निशाना बनाता है। कुछ दशकों पूर्व भारत को विश्व पटल पर कमजोर देश के रूप में समझा जाता था लेकिन आज पूरे विश्व का मानचित्र बदल गया है और भारत एक सशक्त और मजबूत राष्ट्र के रूप में पहचान बना रहा है। यूक्रेन और रूस के युद्ध में जो भूमिका निभा रहा है उसको इतिहास में याद रखा जाएगा। कोई भी समाज तभी सशक्त और ताकतवर बनता है जब वह सकारात्मकता के साथ अपने चिंतन प्रवाह को अग्रसर करता है।

कोटा - आक्रमणों के बाद भी हिंदू समाज का खड़ा रहना, यह हमारी परम्परा का जीवन्त उदाहरण है। विचार, सिद्धांत व तत्वज्ञान के साथ चलने वाला व्यक्ति व समाज चाहिए। इसमें आयु, शिक्षा, आर्थिक व सामाजिक स्तर कुछ भी हो सकता है, लेकिन वैचारिक प्रतिबद्धता एक साथ होकर समाज को संगठित करने का आधार है।

हमारी प्रतिबद्धता राष्ट्र के साथ

हमें सद्गुणों से युक्त हिन्दू समाज बनाना है। समाज को दुर्बल करने वाली शक्तियों से राष्ट्र का संरक्षण करना है। जाति, प्रदेश व क्षेत्र केवल व्यवस्थाएं हैं, लेकिन हमारी प्रतिबद्धता राष्ट्र के साथ है। हमारे ग्रंथों में सब कुछ लिखा है, लेकिन वह आचरण में लाने की जरूरत है।

धर्म को जीवन में उतारें

जो धर्म को समझता है, ऐसे लोग कम नहीं हैं। जो धर्म को समझाने वाले हैं, ऐसे लोग भी कम नहीं हैं, लेकिन धर्म का आचरण अपने जीवन में करने वाले कितने हैं, वही भगवान को सबसे प्रिय हैं। सुनना, समझना, स्वीकार करना, स्वीकार कर अपने जीवन का आचरण बनाया जाना चाहिए।

चाहिए विचार के प्रति समर्पित

सज्जन, सक्रिय, विचार संगठन के प्रति समर्पित करने वाले जीवन के साधन बनाने वाला स्वयंसेवक चाहिए। इस दिशा में हम प्रेरित होकर आगे बढ़ें। मैं उज्जवलता का स्वप्न साकार करने वाला स्वयंसेवक बनूंगा, ऐसा विधान मन में रखकर आगे बढ़ें और निर्दोष समाज का निर्माण करें।

अच्छे नागरिक बनाने का कार्य

संघ की शाखा के माध्यम से देशभक्त, अच्छे हिंदू व अच्छे नागरिक बनाने का कार्य किया जा रहा है। डॉक्टर हेडगेवार ने नया कुछ शुरू नहीं किया बल्कि युगों की परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माण के साथ शुरु किया।

बालासाहब देवरस व्याख्यानमाला

उदयपुर के सेवा भारती चिकित्सालय द्वारा प्रतिवर्ष संघ के तृतीय सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस की स्मृति में व्याख्यानमाला आयोजित की जाती है। इस बार यह व्याख्यानमाला 31 मार्च, 2022 को आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में शहर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उपस्थित प्रमुख व्यक्तियों में वॉल्केम इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक अरविंद सिंघल, मिराज ग्रुप के सीएमडी मदन पालीवाल, पेसिफिक समूह के चेयरमैन राहुल अग्रवाल, जयपुर हार्ट इंस्टीट्यूट के चेयरमैन डॉ. जीएल शर्मा तथा संघ के उदयपुर महानगर संघचालक श्री गोविंद अग्रवाल शामिल हैं।

उद्योग प्रधान देश को अंग्रेजों ने कृषि प्रधान तक सीमित किया

विविध प्रयासों एवं अनगिनत बलिदानों से मिली स्वाधीनता

दुर्भाग्य कि कुछ नेताओं को ही नायक बनाकर प्रस्तुत किया गया

अजमेर में नगर निगम एवं विद्या भारती की विद्वत परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन में शिक्षाविद् हनुमान सिंह राठौड़ का संबोधन–

15 अगस्त, 1947 को भारत को प्राप्त हुई स्वाधीनता किसी एक नेता या एक प्रयास के कारण नहीं बल्कि साहित्य, संगीत, कला, पत्रकारिता तथा आध्यात्मिक आदि क्षेत्रों में हुए विविध प्रकार के प्रयासों व अनगिनत क्रांतिकारियों के बलिदानों के कारण आई। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वतंत्र भारत के कुछ चुनिंदा नेताओं को ही स्वाधीनता आंदोलन का नायक बनाकर प्रस्तुत किया गया।

वास्तविक नायकों का तिरस्कार

स्वाधीनता आंदोलन के वास्तविक नायकों को ना केवल नजरअंदाज किया गया बल्कि अपने राजनीतिक स्वार्थों के कारण समय-समय पर ऐसे वास्तविक नायकों का तिरस्कार और अपमान करने का प्रयास भी होता रहा है। स्वाधीनता का अमृत महोत्सव ऐसे वास्तविक नायकों की पहचान करने का महोत्सव बनना चाहिए।

युवाओं को बताएं चार बातें

इस अमृत महोत्सव के चार अणुव्रत युवाओं को बताएं जाने चाहिए वे हैं– भारत को मानो, भारत को जानो, भारत के बनो तथा भारत को बनाओ।

सही इतिहास की अवहेलना की गई

1947 में आजादी के बाद जयपुर में इंडियन हिस्टोरिकल कौंसिल की एक बैठक हुई। इस बैठक में स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को लिखने का निर्णय लिया गया। इसके लिए तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद और तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद को पत्र लिखे गए। पहले तो इतिहासकारों की इस पहल पर शिक्षा मंत्री आजाद ने कोई रुचि नहीं दिखाई, लेकिन जब राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद का दबाव बना तो इतिहासकारों से कहा गया कि स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े सभी

दस्तावेज एकत्रित किए जाएं। इन दस्तावेजों को एकत्रित करने में उस समय इतिहासकार आरसी मजूमदार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मजूमदार ने जो आधारभूत सामग्री एकत्रित की वह हकीकत में आंदोलन की सही भूमिका को चरितार्थ कर रही थी। इस आधारभूत सामग्री में सरदार भगत सिंह से लेकर सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों की भूमिका प्रभावी तरीके से सामने आई।

कार्यक्रम में स्वराज 75 महोत्सव की पंचामृत संकल्पना आयोजकों द्वारा प्रस्तुत की गई–

- **अपने पूर्वजों का पुण्य स्मरण**
- **अपने पूर्वजों द्वारा इस राष्ट्र के लिए देखे गए स्वप्न**
- **सनातन भारत की झलक**
- **आधुनिक भारत की चमक**
- **अपने 'स्व' की स्पष्ट कल्पना**

लेकिन इसे दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा कि इतिहासकार आरसी मजूमदार की आधारभूत सामग्री के बजाए डॉ. ताराचंद द्वारा जुटाई गई सामग्री पर उन लेखकों से इतिहास लिखवाया गया जो वामपंथी और कांग्रेस विचारधारा के थे। आज भी एनसीईआरटी के पाठ्यक्रम में देश के युवाओं को वो ही इतिहास पढ़ाया जाता है। यही वजह है कि देश के सामने स्वतंत्रता आंदोलन का सही स्वरूप नहीं आ सका। यदि आरसी मजूमदार द्वारा जुटाई गई आधारभूत सामग्री पर स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास लिखा जाता तो देश के युवाओं में एक नई ऊर्जा का संचार होता।

अंग्रेजी शासन का दुष्प्रभाव

देश के युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन की सच्चाई को समझना चाहिए। भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद जैसे युवाओं ने किस प्रकार अपना बलिदान देकर देश को आजादी दिलवाई है। डॉ. मनमोहन सिंह ने प्रधानमंत्री रहते हुए अपनी इंग्लैड की यात्रा के दौरान कहा कि भारत को प्रशासन करना अंग्रेजों ने ही सिखाया, जबकि हमारे यहां अंग्रेजों से पहले कौटिल्य, चंद्रगुप्त के शानदार शासन रहे हैं। अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य को बनाने के लिए अपने नजरिए से दुनिया पर राज किया। जागीरदारी परंपरा भी अंग्रेजों की है।

अंग्रेजों के शासन से पहले दुनिया में भारत का राजस्व 23 प्रतिशत था। जबकि अंग्रेजों ने हमारे राजस्व को तीन प्रतिशत कर दिया। भारत को कृषि प्रधान देश कह कर पीछे धकेला गया। अंग्रेजों के आने से पहले भारत उद्योग प्रधान देश था। भारत में बने कपड़े और अन्य वस्तुएं विदेशों में भेजी जाती थी, लेकिन अंग्रेजों ने उद्योग प्रधान देश को कृषि प्रधान बना दिया। अंग्रेजों ने अपने शासन में भारतीय संस्कृति और परंपराओं का भी नुकसान किया।

देश के नागरिकों को अंग्रेजों की शासन व्यवस्था की हकीकत को भी जानना चाहिए। आज हमारे देश में अंग्रेजी प्रमुख भाषा हो गई है। अंग्रेजी के जानकार को ही समझदार और पढ़ा लिखा समझा जाता है। क्या राजस्थानी भाषा बोलने वाला अक्लमंद नहीं होता? राजस्थान के दूरदराज के गांवों में पानी की किल्लत को ध्यान में रखते हुए एक ग्रामीण भी बरसात का पानी वैज्ञानिक तरीके से संरक्षित करता है। यह बात अलग है कि अब उन परंपराओं को कमजोर किया जा रहा है। ●

भारतीय जन-जीवन में समाया है एक्यूपंक्चर

भारत का 'सूचिका भेदन' ही आज का एक्यूपंक्चर

हमारे शरीर में 365 ऊर्जा बिंदु होते हैं। इन बिंदुओं पर बारीक सूई से छेद (पंक्चर) कर इलाज किया जाता है। इस चिकित्सा पद्धति को 'एक्यूपंक्चर' का नाम दिया गया है। लेखिका का मानना है कि यह चिकित्सा पद्धति प्राचीन भारत में 'सूचिका भेदन'के नाम से प्रचलित थी।

● कुसुम शर्मा

भारतीय मान्यता के अनुसार एक्यूपंक्चर चिकित्सा की उत्पत्ति भारत में हुई थी जिसे 'सूचिका भेदन' के नाम से जाना जाता है । भारत में ही इसका विकास हुआ और फिर मध्य एशिया, चीन, जापान एवं अन्य देशों में यह विज्ञान फैला । इस उपचार पद्धति को बौद्ध साधु हमारे देश से दूसरे देशों में ले गए। सुश्रुत संहिता में मर्मबिंदुओं को दर्शाता हुआ एक चित्र प्राप्त होता है।

'अर्द्धनारीश्वर' पर आधारित

चीनी लोग एक्यूपंक्चर को अपना विज्ञान मानते हैं और 5 हजार वर्षों से भी अधिक पुराना बताते हैं। चीन के प्राचीन ग्रंथों में एक्यूपंक्चर का उल्लेख मिलता है। चीन के एक्यूपंक्चर में यिन और यांग का जो सिद्धांत है, हमारी भारतीय संस्कृति में वही सिद्धांत शिव और पार्वती के स्वरूप पर आधारित है ।

ऐसा माना जाता है कि समस्त सृष्टि में एक दैवी ऊर्जा है जिसके परिपूर्ण होने पर ही सब कुछ सुचारू रूप से चलता है। यह ऊर्जाएं दो प्रकार की होती हैं और दोनों आपस में मिलकर संपूर्ण होती हैं, जैसे शिव और पार्वती का अर्द्धनारीश्वर का स्वरूप। दोनों के मिलने से ही संतुलन की स्थिति आती है। इसी शिव-पार्वती के मिलन को चीनवासियों ने यिन व यांग का सिद्धांत कहा है। फिर उसी के आधार पर एक्यूपंक्चर पद्धति का निरूपण हुआ है।

संस्कारों में सूचिका भेदन

हमारी संस्कृति में संपूर्ण संस्कार प्रक्रिया में एक कर्णवेध संस्कार भी है। भारतीय संस्कृति में पुरुष एवं नारी के बचपन में कर्ण छेदन करवा दिया जाता था जिससे मस्तिष्क तीक्ष्ण होता है और स्मरण शक्ति प्रबल होती है। इससे त्वचा संबंधी बीमारी नहीं होती।

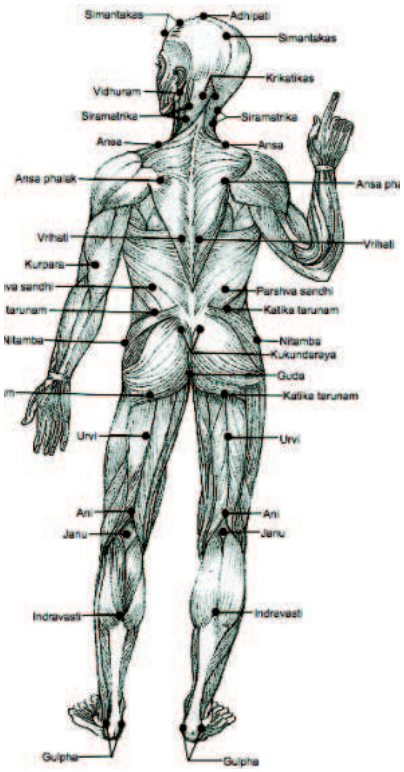

जिस स्थान पर कर्ण छेदन किया जाता है वह अनिद्रा व पक्षाघात का बिन्दु है।

भारतीय संस्कारों में अंत्येष्टी संस्कार में जो कपाल क्रिया की जाती है उसमें आत्मतत्व को पूर्ण रुप से देह व पिछले स्मृतिजन्य संस्कारों से मुक्ति पाने के लिए ही की जाती है क्योंकि आत्मा संस्कार चैतन्य रूप से मस्तिष्क में निवास करती है। यदि हम इस दृष्टि से देखें तो भारतीय संस्कृति में संस्कार के मूल में सूचिका भेदन अथवा एक्यूपंक्चर को आत्मसात किया गया है।

गहनों में एक्यूपंक्चर

महाभारत में भीष्म पितामह को सम स्थिति आंतरिक बिंदु पर जो तीर लगे थे उसमें सभी आंतरिक संतुलन बनाए हुए थे। इसीलिए, वह बाणों की शैया पर 46 दिन तक जीवित रह सके। कान में झुमके, कुंडल व बाली आदि आभूषण एक्यूपंक्चर के सिद्धांत पर आधारित हैं जो सौंदर्य को बढ़ाने के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी माने गए हैं।

नाक में नथ धारण करना जो भारतीय समाज में एक सामान्य परंपरा है उससे बहुत से रोगों का उपचार होता है। नासिका से संबंधित रोगों का बचाव रहता है। फेफड़ों में शुद्ध वायु का संचार होता है। सुनने की शक्ति बढ़ती है। गले में खराश व जुकाम नहीं होती। नासिका छिद्र कराने से नाक की हड्डी का बढ़ना रुक जाता है और म्यूकस मेम्ब्रेन की सूजन रुक जाती है। इसके अलावा भारतीय संस्कृति में नाभि छेदन, टैटू गोदन की जो प्रक्रिया है वह पूर्णतया एक्यूपंक्चर पर आधारित है।

एक्यूप्रेशर

लघुशंका के समय बाएं कान पर जनेऊ लपेटने के पीछे भी शक्ति के अपव्यय को रोकना ही है। कोहनी के ऊपर भुज बंद धारण करना, गले में हंसली धारण करना, कलाई पर कंगन, उंगलियों में अंगूठी, पैर में कड़े आदि धारण करना एक्यूप्रेशर का ही रूप है। सोने अथवा चांदी के विभिन्न धातुओं के द्वारा हमारे विशेष प्वाइंट पर दबाव बना कर नर्वस सिस्टम को नई ऊर्जा गति प्रदान की जाती है।

हम यह कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में आभूषण धारण करने की जो प्रथा है वह एक्यूपंक्चर एवं एक्यूप्रेशर की विचारधारा को लेकर ही सनातन काल से समुन्नत रही है। आभूषण केवल महिलाएं ही धारण नहीं करती थीं, बल्कि पुरुषों के द्वारा भी समान रूप से धारण किए जाते थे। हमारे ग्रामीण व जनजातीय समुदाय में आज भी इस तरह के अनेक सिद्धांतों का प्रसन्नता से पालन किया जा रहा है।

(लेखिका जयपुर में एक्यूपंक्चर-एक्यूप्रेशर की चिकित्सक हैं)

नई शिक्षा नीति भव्य राष्ट्र का स्वप्न करेगी साकार - चांद किरण सलूजा

राजस्थान में विश्वविद्यालय और महाविद्यालयी शिक्षकों के प्रतिनिधि संगठन रूक्टा (रा.) (राजस्थान यूनिवर्सिटी एंड कॉलेज टीचर्स एसोसिएशन–'राष्ट्रीय') का 60वां प्रांतीय अधिवेशन सीकर में संपन्न हुआ।

अधिवेशन में प्रथम सत्र 'देराश्री स्मृति व्याख्यान' में मुख्य वक्ता शिक्षाविद प्रो. चांद किरण सलूजा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को भारत केन्द्रित बताते हुए इसे पूर्ण रूप से लागू करने की आवश्यकता बताई। प्रो. सलूजा ने कहा कि यह शिक्षा नीति निश्चित ही सभ्य समाज और भव्य राष्ट्र के स्वप्न को साकार करेगी।

इस अवसर पर प्रो.जगदीश प्रसाद सिंघल ने कहा कि रुक्टा(रा.) संगठन का उद्देश्य सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और शैक्षिक चेतना द्वारा भव्य राष्ट्र का निर्माण करना है।

अधिवेशन में रुक्टा (रा.) के प्रदेश महामंत्री डॉ.सुशील कुमार बिस्सु ने राजस्थान में उच्च शिक्षा संस्थानों की वर्तमान दुर्दशा पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने संगठन द्वारा उच्च शिक्षा तथा उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं के समाधान हेतु संगठन द्वारा किए गए प्रयत्नों के संबंध में विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। रुक्टा (रा.) के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दीपक शर्मा ने संगठन के विभिन्न लक्ष्यों के संबंध में विस्तार से अपनी बात रखी।

आयोजन सचिव डॉ.अशोक कुमार ने बताया कि अधिवेशन में राजस्थान के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से लगभग 700 शिक्षकों ने भाग लिया।

अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ (एबीआरएसएम) द्वारा पिछले दिनों शोध गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस शोध प्रतियोगिता के विजेताओं को अधिवेशन में श्रीफल, शाल एवं पुरस्कार राशि द्वारा सम्मानित किया गया। अधिवेशन में एबीआरएसएम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर उपस्थित रहे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री कैलाश चौधरी तथा राजस्थान के पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री वासुदेव देवनानी ने भी अधिवेशन को संबोधित किया।

देश प्रेम की भावना मात्र दो दिन के लिए नहीं प्रतिदिन व्यवहार का हिस्सा बने : विजयानंद

देशभक्ति सिर्फ कुछ दिनों तक सीमित ना रहे यह हमारे प्रतिदिन व्यवहार का हिस्सा है। इसके लिए आवश्यकता नहीं है कि हम सीमा पर जाकर देश की रक्षा करें। इसके लिए आवश्यक यह है कि हम एक आदर्श नागरिक बने।

यह आह्वान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक विजयानंद ने चित्तौड़गढ़ में वर्ष–प्रतिपदा उत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में किया।

उन्होंने कहा कि स्वच्छता, समरसता व नियम परायणता भाव लाकर हम आदर्श नागरिक बन सकते हैं। देशभक्ति सिर्फ विचार, विमर्श और बुद्धि के विलास का विषय नहीं है। यह आचरण का विषय है।

अंग्रेजी कैलेंडर व भारतीय कालगणना के मध्य अंतर व विकास के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आज से 10 वर्ष पूर्व हिन्दू नववर्ष मात्र सामान्य कार्यक्रम था। जब कुछ संगठन व विद्यालय मिल कर मुख्य चौराहों पर नीम व मिश्री का प्रसाद वितरण करते थे।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –
सामान्य– 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
श्रेष्ठ– 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
उत्तम – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. लाला लाजपत राय किसके विरोध में हुए लाठीचार्ज में घायल हुए थे?
2. आनन्द मठ उपन्यास की कथावस्तु किस पर आधारित है?
3. स्वतन्त्रता सेनानी सागरमल गोपा का जन्म राजस्थान में कहाँ हुआ था?
4. जयपुर में क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद को दो माह तक ठहराने वाले देशभक्त कौन थे?
5. 'कूका विद्रोह' किसके नेतृत्व में प्रारंभ हुआ?
6. काकोरी काण्ड में शामिल रामप्रसाद बिस्मिल कब शहीद हुए ?
7. प्रसिद्ध क्रांतिकारी खुदीराम बोस को जब फांसी दी गई तो उनकी उम्र कितनी थी?
8. महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को किस घटनाक्रम के बाद वापस लिया था?
9. अमर शहीद राजगुरू का पूरा नाम बताइए?
10. लाहौर षड्यंत्र केस में आजीवन कारावास की सजा प्राप्त करने वाले क्रांतिकारी कौन थे?

उत्तर – पृष्ठ 16 पर

अ.भा.साहित्य परिषद का महाधिवेशन

साहित्यकार राष्ट्र को जाग्रत करता है

स्वाधीनता संग्राम में साहित्यकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने साहित्य के द्वारा राष्ट्र को आंदोलित कर स्वाधीनता संग्राम के लिए प्रेरित एवं जागृत करने का कार्य साहित्यकारों द्वारा किया गया। यह कहना है साहित्य परिषद के संगठन मंत्री डॉ.विपिन चंद्र पाठक का। जयपुर में 27 मार्च को संपन्न साहित्य परिषद के महाधिवेशन को संबोधित करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि साहित्य के द्वारा राष्ट्र जागरण का कार्य निरंतर चलता रहेगा।

मुख्य अतिथि जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के कुलपति प्रो.बलवंत एस जानी ने कहा कि साहित्य एक बड़ा अनुष्ठान है। बड़ी संख्या में विदेशी सहित्यकारों ने भी भारतीय संस्कृति व साहित्य से प्रेरित होकर साहित्य रचना की है। आज देश में भारतीयता के वातावरण का निर्माण हुआ है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रोफेसर नन्द किशोर पाण्डेय ने कहा कि साहित्यकार अपना सर्वस्व अर्पण कर पूरे राष्ट्र को जागृत करता है एवं सुसंस्कृत बनाता है।

साहित्य परिषद के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अन्नाराम ने बताया कि साहित्य परिषद राष्ट्र जागरण के इस कार्य को अधिकतम विस्तार प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है। अधिवेशन में डॉ.मथुरेश नंदन कुलश्रेष्ठ, बलवीर सिंह 'करुण', डॉ. ममता जोशी, मोनिका गौड़ सहित प्रदेश के डेढ़ सौ से अधिक साहित्यकार उपस्थित थे।

संघ के गीतों पर किया शोध कार्य

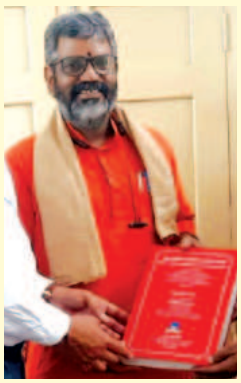

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभिन्न कार्यक्रमों में देश की सभी भाषाओं में अनेक प्रकार के गीत गाए जाते हैं। इन गीतों पर अ.भा.साहित्य परिषद के संगठन मंत्री विपिन चंद्र पाठक ने शोध कार्य करते हुए पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने राष्ट्रीय–सांस्कृतिक–साहित्यिक भाव बोध और संघ के गीतों में निहित राष्ट्रीय बोध और सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण किया। डॉ.विपिन चंद्र का यह कार्य अभिनंदनीय है। उनका यह प्रयास संघ गीतों की ओर संपूर्ण देश का ध्यान आकृष्ट करेगा।

लेह-लद्दाख में सिंधु दर्शन तीर्थ यात्रा

भक्तिपूर्ण, उत्साहजनक और रोमांचक सिंधु दर्शन तीर्थ यात्रा इस बार 23 से 27 जून,2022 तक होगी। सिंधु दर्शन महोत्सव की शुरुआत अक्टूबर 1997 में की गई थी। वर्तमान में इसे प्रतिवर्ष जून की पूर्णिमा के दिन लद्दाख के लेह में आयोजित किया जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता एवं सिंधु नदी से देश-दुनिया को जोड़ने के लिए इस उत्सव का आरंभ किया गया।

प्रतिवर्ष इस महोत्सव में देश-विदेश के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। ऐसे लोग अपने राज्य की नदी के पानी से भरे मिट्टी के बर्तन लाकर सिंधु नदी में विसर्जित करते हैं। इस प्रकार देश की सांस्कृतिक एकता को पुष्ट करते हैं।

सनातन, बौद्ध, सिख, क्रिश्चियन, सुन्नी, शिया आदि सभी मजहबों से जुड़े कई संगठनों की इस उत्सव में सहभागिता रहती है। इस प्रकार यह महोत्सव राष्ट्रीय एकता और अखंडता को भी बढ़ावा देता है। नदी के तट पर लगभग 50 वरिष्ठ लामाओं द्वारा प्रार्थना की जाती है। विभिन्न राज्यों के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाते हैं। स्थानीय कला और शिल्प को नजदीक से देखने-समझने का अवसर मिलता है।

सिंधु दर्शन का कार्यक्रम लेह शहर से 8 किमी. दूर स्थित शे मनला में सिंधु नदी के किनारे मनाया जाता है। हिमालय परिवार, भारतीय सिंधु सभा, सिंधु दर्शन यात्रा समिति जैसे कई संगठनों की इसके आयोजन में सहभागिता रहती है। आयोजन के पीछे 'हिमालय सुरक्षित तो देश सुरक्षित'जैसी अवधारणा रहती है। हिमालय की गोद में बसे सभी राज्यों की संस्कृति, सुरक्षा व विकास के मुद्दों पर विचार-विमर्श भी होता है। सीमा क्षेत्रों के लोगों में राष्ट्र एकता का संदेश जाए तथा शेष देश के वासियों को सीमांत क्षेत्रों की संस्कृति व परंपराओं का ज्ञान हो।

इस महोत्सव के मार्गदर्शक श्री इन्द्रेश कुमार ने भोपाल में बीती 10 फरवरी को कहा कि यह तीर्थयात्रा एक मिशन है, जिसे मिलकर सभी को जोड़ना है। सिंधु घाट तीर्थस्थल बनकर तैयार हुआ है।

तीर्थयात्रा अलग-अलग पांच मार्गों से चलेगी। चार यात्राएं सड़क मार्ग द्वारा जम्मू तथा चंडीगढ़ से आरंभ होंगी। वायु मार्ग से यात्रा दिल्ली से आरंभ होगी। यह लेह-लद्दाख के खूबसूरत क्षेत्रों का भ्रमण करने के लिए देश-विदेश के लोगों के लिए एक अवसर भी है।

इस प्रकार से सिंधु महोत्सव सिंधु नदी को भारत में बहुआयामी सांस्कृतिक पहचान, सांप्रदायिक सद्भाव और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करता है। इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ ही भारत के उन बहादुर सैनिकों को भी प्रतीकात्मक सलामी है जिन्होंने सियाचिन, कारगिल और अन्य स्थानों पर बहादुरी से लड़ाई लड़ी। ●

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

हिन्दू नव-वर्ष

● बुलाकी दास भगत

हिन्दू गौरव की याद दिलाता,
देखो फिर नव-वर्ष आया।
भरता हृदयों में नव उल्लास,
नव आकांक्षा, उत्कर्ष लाया।।

जल से भरे महासागर,
कहीं भू-भाग उभरा ऊपर।
आकाश, नक्षत्र, तारे अगणित,
अद्भुत सृष्टि कर्म सुखकर।
ब्रह्मा के मन को भी भाया,
देखा फिर नव-वर्ष आया।।1।।

जन मंगल का आदर्श धरा पर,
रामराज्य में साकार हुआ।
श्रीराम विराजे सिंहासन पर,
चहुं दिस जय जय कार हुआ।
जन-जन में अपार हर्ष छाया,
देखो फिर नव-वर्ष आया।।2।।

धर्म संस्कृति संरक्षण के हित,
किया तत्परता से दुष्ट दलन।
महाप्रतापी विक्रम शालिवाहन,
वरुणावतार झूलेलालन।
उनकी पुण्य स्मृति साथ लाया,
देखो फिर नव-वर्ष आया।।3।।

वेदों का पुनरुद्धार किया,
कुरीति-पाखंड पर प्रहार किया।
ऋषि दयानंद ने भारत में,
स्वराज्य का शंखनाद किया।
इसी दिन 'आर्य समाज' चलाया,
देखो फिर नव-वर्ष आया।।4।।

सोए हिन्दू को पुनः जगाने,
संगठन का दीप जलाया।
स्वयं को तिल-तिल जलाकर,
देशहित जीना सिखलाया।
केशव इसी दिन आया,
यह देख नव-वर्ष महकाया।।5।।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सुखकर,
खलिहानों में भंडार भरे।
कहीं बिहू, कहीं बैसाखी देखो,
कहीं गुड़ी पड़वा उमंग भरे।
सुनहरा सूरज उग आया,
देखो फिर नव-वर्ष आया।।6।।

नवरात्रि पावन पर्व हमारा,
शक्ति आराधना संग लाया।
राष्ट्र साधना चले अनवरत,
आत्म-बल प्रकटाने आया।
चहुं ओर बसंत खिलखिलाया,
देखो फिर नव-वर्ष आया।।7।।

-ज्योति नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, जयपुर

किशनगढ़ में संस्कृति–संस्कार विज्ञान कार्यशाला

वर्तमान पीढ़ी को वैदिक संस्कृति से जोड़ना आवश्यक– कोठारी

हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा संस्थान द्वारा किशनगढ़ (अजमेर) में पिछले दिनों आयोजित तीन दिवसीय संस्कृति संस्कार विज्ञान कार्यशाला के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री गुणवंत सिंह कोठारी ने कहा कि हमारी पीढ़ी को पुनः वैदिक संस्कृति से जोड़ने के लिए इसके संस्कार व वैज्ञानिकता को उन तक पहुँचाना होगा। मुख्य अतिथि वेदांती राघवाचार्य जी महाराज ने कहा कि समाज में भारतीय संस्कृति के प्रति जो उदासीनता आई है, उसे पुनः जागृत करने की आवश्यकता है ताकि विश्व कल्याण की भावना रखने वाली संस्कृति पुनः स्थापित हो।

विशिष्ट अतिथि उमेशदास का कहना था कि ईष्ट की प्राप्ति व अनिष्ठ का परिहार, यही वेदों का ज्ञान है और यह हमारी संस्कृति को जीवित रखने के लिए जरूरी है।

गांव के हर घर को दी गई पालन हेतु गाय (बांसवाड़ा)

गांवों के प्रत्येक घर में गौ–पालन हो , इस उद्देश्य से बांसवाड़ा जिले के गांव शिवपुरा में हर घर को गाय दी जा रही है। नंदी पूजन व आरती कर परंपरागत ढोल–कुंडी से शोभायात्रा निकाली गई तथा गांव को 'अभय ग्राम' घोषित करते हुए कार्यक्रम भी हुआ।

कार्यक्रम में भारतीय गौ अनुसंधान संयोजक श्री शंकरलाल ने कहा कि गौमाता के घर में आने पर समझो कि डॉक्टर घर में आया है। गाय का पंचगव्य औषधि है। दूध अमृत के समान गुणकारी है। गौमाता के द्वारा शून्य बजट की जैविक खेती होती है। गौमूत्र व गोबर से कीटनाशक तैयार होता है। गौ एक प्रकार से आत्मनिर्भर, स्वावलंबी जीवन का आधार है। उन्होंने बताया कि 2025 तक गांवों के हर घर में गौपालन और शहरों के हर घर तक गौदुग्ध व घी पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है।

विहिप की स्वराज–75 संबंधी प्रबुद्ध नागरिक संगोष्ठी (बारां)

भारत विश्व गुरु की राह पर बढ़ रहा है

स्वाधीनता अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित स्वराज–75 प्रबुद्ध नागरिक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि भारत विश्वगुरु की राह पर आगे बढ़ रहा है। नई पीढ़ी को शहीदों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, सावरकर, बिरसा मुंडा, मदन लाल धींगरा, उधम सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे स्वाधीनता के महानायकों के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता पर्यावरणविद् डॉ.अर्जुन सिंह राजावत ने की। बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

स्वदेशी जागरण मंच (उदयपुर)

'रोजगार सृजन' पुस्तक का विमोचन

वर्तमान समय में रोजगार की समस्या का मूल कारण केवल शिक्षा के आधार पर जीविकोपार्जन तलाश करना है। यह कहना है स्वदेशी जागरण मंच, चित्तौड़ प्रांत के संयोजक श्री पुरुषोत्तम शर्मा का। उदयपुर के 'केशव निकुंज' कार्यालय में जागरण मंच के अ.भा. सहसंयोजक श्री सतीश कुमार की पुस्तक 'रोजगार सृजन' के विमोचन समारोह में उन्होंने युवाओं से जॉबसीकर न होकर जॉबप्रोवाइडर बनने का आह्वान भी किया।

जल संरक्षण (उदयपुर)

भारत विकास परिषद् व विद्या निकेतन द्वारा जल स्रोत पूजन व जल देवता की आरती के माध्यम से जल संरक्षण का महत्व समझाया गया। छात्रों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई। जल संरक्षण के संबंध में धारीवाल स्कूल में वीडियो, चित्र व स्लोगन का भी उपयोग किया गया।

भगवान देवनारायण मंदिर खोलने की उठी मांग (भीलवाड़ा)

गुर्जर समाज सहित अन्य लोगों ने समर्थन में निकाला मार्च

भीलवाड़ा के मांडल कस्बे में 45 वर्षों से बंद पड़े भगवान देवनारायण के मंदिर को खोलने तथा उसमें पूजा–अर्चना शुरु करवाने की मांग उठ रही है। गुर्जर समाज तथा विभिन्न वर्गों व संगठनों के हजारों लोगों ने इस मांग के समर्थन में कलेक्ट्रेट से 17 किमी. लम्बा पैदल मार्च निकाला। जेल चौराहे पर 2 घंटे तक धरना दिया गया। देवनारायण संघर्ष समिति के संयोजक उदयलाल भड़ाना ने बताया कि इस संबंध में कलेक्टर आशीष मोदी तथा एसपी को ज्ञापन सौंपा गया।

अमृत महोत्सव पर माँ–बेटी सम्मेलन (समरानियाँ , बारां)

विद्या भारती द्वारा संचालित स्वामी विवेकानन्द विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय, समरानियाँ में माँ–बेटी सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बालिका के सर्वांगीण विकास में मां की भूमिका विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

उत्तर– स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी – 1. साइमन कमीशन 2. सन्यासी विद्रोह पर 3. जैसलमेर 4. राजवैध पंडित मुक्तिनारायण शुक्ल 5. गुरु रामसिंह जी 6. 19 दिसम्बर, 1927 7. 19 वर्ष 8. चौरी–चौरा कांड 9. शिवराम हरि राजगुरु 10. बटुकेश्वर दत्त

गुरु तेगबहादुर जी ने दिया समाज को निर्भय, निडर व साहस का मंत्र (रामगंजमंडी ,कोटा)

आज से 400 वर्ष पूर्व आक्रांताओं के अत्याचार से ग्रस्त समाज को निर्भय, निडर, साहसी बनने का मंत्र गुरु तेगबहादुर जी ने दिया। उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब में संतों की वाणी को संकलित किया। गुरु जी ने अत्याचारों के आगे शीश कटाना मंजूर किया परन्तु अपना धर्म परिवर्तन स्वीकार नहीं किया गुरु के त्याग ने उस समय के समाज में आत्मविश्वास का संचार किया। यह कहना है राज्य अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री जसवीर सिंह का। वे बीते दिनों रामगंज मंडी के स्थानीय साबू खेल मैदान में गुरु तेगबहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व के अवसर पर बोल रहे थे। संघ के विभाग प्रचारक श्री मनोज प्रताप ने बताया कि कोटा विभाग में संघ की 1 हजार से अधिक शाखाओं में 50 हजार स्वयंसेवकों के सम्मुख गुरु तेगबहादुर जी की जीवनी का वाचन किया जा रहा है।

इसी प्रकार एक कार्यक्रम **अन्ता (बारां)** में भी आयोजित हुआ।

जोधपुर विद्या भारती पंचांग विमोचन
एक लाख घरों तक पहुँचेगा भारतीय पंचांग

जोधपुर प्रांत के पाली, सिरोही, जालोर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ इन 10 सरकारी जिलों के 288 विद्या मंदिरों के एक लाख विद्यार्थियों के घरों तक भारतीय पंचांग पहुँचाया जाएगा।

जनगणना में "मैं हिंदू नहीं हूँ" लिखवाने का प्रयत्न

कुछ लोग प्रयत्न कर रहे हैं कि जनगणना में 'मैं हिंदू नहीं हूँ' ऐसा लिखवाया जाए। यह बात बताते हुए संघ के क्षेत्र संघचालक डॉ.रमेश अग्रवाल ने कहा कि संघ ने इस तरह के विमर्श को नेस्तनाबूद करने का आह्वान किया है।

भारत ही संसार को दिशा देगा–राघवाचार्य जी महाराज

विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा संत मार्गदर्शक मण्डल बैठक में महामण्डलेश्वर राघवाचार्य जी ने कहा कि विद्या, शांति और शांति का सूत्रपात भारत से हुआ और आने वाली सदी भी भारत की होगी। बैठक में इस बात पर बल दिया कि भारत में सामाजिक समानता और समरसता हेतु संत समाज को मठ–मंदिरों से बाहर आकर विभिन्न मानव बस्तियों में कार्य करना होगा।

जयपुर स्थित कौशल्यादास जी की बगीची में आयोजित बैठक में कनक बिहारी मंदिर के महामण्डलेश्वर सियाराम, हाथोज धाम के महामण्डलेश्वर बालमुकुन्दाचार्य जी ने कहा कि जब तक युवा पीढ़ी में अपने धर्म व संस्कृति के संस्कार नहीं दिए जायेंगे तब तक संत की भूमिका अपूर्ण रहेगी।

रामसेवकदास जी महाराज ने कहा कि पराधीनता के कालखण्ड में भारत में विदेशी आक्रांता सनातन सभ्यता को मिटाने में पूरी तरह असफल रहे। हिन्दू समाज का आह्वान करते हुए संत बालकदास ने कहा कि यदि समाज ने अपनी भूमिका को ठीक से नहीं पहचाना तो निश्चित रूप से पिछड़ जाएंगे। आगामी कार्यक्रम की तैयारी बैठक के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम में तीस से अधिक भिन्न–भिन्न पद्धतियों के संतों ने आशीर्वचन दिए।

जनसांख्यिकीय असंतुलन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

उदयपुर के मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (इतिहास विभाग) एवं प्रताप गौरव केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में 'जनसांख्यिकीय असंतुलन : सुरक्षा एवं आर्थिक विकास' विषय पर 31 मार्च को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में बोलते हुए संघ के पूर्व सरकार्यवाह श्री सुरेश भैय्या जी जोशी ने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्रों में समुदाय विशेष की बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न जन सांख्यिकीय असंतुलन के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा पर खतरा बढ़ गया है। उन्होंने बढ़ते जन सांख्यिकीय असंतुलन के पीछे तुष्टीकरण की नीति को जिम्मेवार बताया।

भैय्याजी ने देश में हिंदुओं की घटती जन्म दर पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हमारा संविधान अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक का विभेद नहीं करता, परन्तु इस संबंध में समाज में भ्रांतियां योजनाबद्ध रूप से फैलाई जा रही हैं। उन्होंने जन सांख्यिकीय असंतुलन के लिए घुसपैठ, जन्म दर वृद्धि और मतांतरण को भी जिम्मेदार ठहराया।

संगोष्ठी निदेशक डॉ. कैलाश सोडानी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि भारत का बहुसंख्यक समाज अभिव्यक्ति को लेकर संकोच में है। अब इस स्थिति से बाहर आना होगा।

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो.एसएस सारंगदेवोत का कहना था कि जनसंख्या और विकास का सीधा संबंध है। 2011 की जनगणना के आंकड़े जन सांख्यिकीय असंतुलन को दर्शाते हैं जो कि चौंकाने वाले हैं।

प्रो.बीएल चौधरी ने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्रों में निवासरत लोगों में राष्ट्रीयता का भाव जगाना आज के समय में महती आवश्यकता है। संगोष्ठी समन्वयक अनुराग सक्सेना ने संगोष्ठी के विषय और स्वराज–75 की अवधारणा पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी आयोजन सचिव प्रो.दिग्विजय भटनागर ने बताया कि संगोष्ठी में कई वर्तमान एवं पूर्व कुलपतियों सहित बड़ी संख्या में शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों की सहभागिता रही।

बाल प्रश्नोत्तरी -17

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 1 अप्रैल का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर व्हाट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं।

उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 5 मई, 2022

1. **1990 से 1992 में कश्मीर घाटी से कितने हिंदू परिवारों ने पलायन किया?**
   (क) 50 हजार (ख) 30 हजार (ग) 70 हजार (घ) 40 हजार
2. **प्रसिद्ध ग्रंथ 'दशावतारचरित' के लेखक कौन थे?**
   (क) क्षेमेन्द्र (ख) वसुगुप्त (ग) कल्हण (घ) पाणिनी
3. **'द कश्मीर फाइल्स' के निर्देशक व लेखक कौन हैं?**
   (क) अभिषेक अग्रवाल (ख) विवेक अग्निहोत्री (ग) अतुल श्रीवास्वत (घ) पल्लवी जोशी
4. **संस्कृत व्याकरण के रचयिता पाणिनी की प्रसिद्ध पुस्तक कौन सी है?**
   (क) अष्टाध्यायी (ख) मनुस्मृति (ग) राजतरंगिणी (घ) त्रिखाशास्त्र
5. **पिछले दिनों चतुर्थ चित्र भारती फिल्मोत्सव किस शहर में आयोजित हुआ?**
   (क) इन्दौर (ख) भोपाल (ग) जबलपुर (घ) उज्जैन
6. **चित्र भारती फिल्मोत्सव में आनंद चौहान को 'वॉशिंग मशीन' के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का प्रथम पुरस्कार मिला है। वे राजस्थान के किस जिले से आते हैं?**
   (क) बीकानेर (ख) जोधपुर (ग) जयपुर (घ) सीकर
7. **होली पर किस देश में हिन्दू मंदिर पर हमलाकर तोड़फोड़ की गई?**
   (क) थाईलैंड (ख) म्यांमार (ग) पाकिस्तान (घ) बांग्लादेश
8. **विश्व पुस्तक दिवस मनाने की घोषणा भारत ने किस वर्ष की?**
   (क) 1995 (ख) 2001 (ग) 2010 (घ) 2021
9. **क्रांतिकारी अनंत लक्ष्मण कान्हेरे की शहादत कब हुई?**
   (क) 19 अप्रैल, 1910 (ख) 19 अप्रैल, 1905
   (ग) 19 अप्रैल, 1915 (घ) 19 अप्रैल, 1920
10. **भारत के कितने धरोहर स्थल 'वर्ल्ड हेरिटेज सूची' में शामिल हैं?**
    (क) चालीस (ख) तीस (ग) बीस (घ) दस

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वाट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -17)

उत्तर शीट - 1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( )
6.( ) 7.( ) 8.( ) 9.( ) 10.( )

नाम .....पिता का नाम.....

उम्र ..... पूर्ण पता .....

.....पिन.....

मोबाइल नं. .....

पुरस्कार नहीं दण्ड चाहिए

विद्यार्थियों को गणित के अध्यापक ने घर से हल करके लाने के लिए कुछ प्रश्न दिए।

एक बालक ने अन्य सारे प्रश्न तो सही-सही कर लिए, केवल एक प्रश्न को हल करने में उसे अपने एक मित्र की सहायता लेनी पड़ी। अगले दिन कक्षा में इसी विद्यार्थी के सभी उत्तर सही देखकर अध्यापक ने बड़ी प्रशंसा की और अपना पैन पुरस्कार में देने लगे।

किन्तु यह क्या! वह विद्यार्थी फूट-फूट कर रोने लगा- ''गुरुजी, मैंने सारे प्रश्न हल नहीं किए हैं। इनमें से एक प्रश्न अपने मित्र की सहायता से हल किया था। मैंने आपसे सच छुपाकर धोखा दिया है। मुझे पुरस्कार नहीं, दण्ड मिलना चाहिए।''

अध्यापक महोदय उस बालक की सचाई से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा- ''अब यह पुरस्कार मैं तुम्हें तुम्हारी सत्यवादिता के लिए देता हूँ।''

यही बालक आगे चलकर गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ।

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिए जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आदिवासियों की सहायता से अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने वाले क्रांतिकारी
- आपका जन्म विशाखापट्टनम (आन्ध्रप्रदेश) में हुआ था।
- 1986 में भारतीय डाक विभाग ने आप पर एक स्मारक डाक टिकट जारी किया।

उत्तर : अल्लूरी सीताराम राजू

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

23

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

सुभाष को यूरोप लौटना पड़ा... भारतीय जनमानस व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके बढ़ते प्रभाव से अंग्रेज सरकार ही नहीं कांग्रेस के कई नेता भी व्यथित थे।... किन्तु सुभाष दृढ़ता से आगे बढ़ते रहे...

लम्बे समय तक विदेश एवं जेल में बंदी रहने के बाद भी 1938 में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के लिए उन्हें अध्यक्ष पद के लिए चुना गया... यह उनके विचारों की विजय थी

यह ऐतिहासिक अवसर था कि 41 वर्षीय युवा अध्यक्ष बना... 51 बैलों द्वारा खींची गई गाड़ी से 'सुभाष' अधिवेशन में पहुंचे।

सुभाष ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के 51वें हरिपुरा अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण में कहा...

अध्यक्ष रहते देशभर के दौरे किए... और लोगों में साहस व शक्ति का संचार किया। इस समय सुभाष की लोकप्रियता चरम पर थी। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उन्हें पुनः अध्यक्ष बनाने का मन बना लिया किन्तु कांग्रेस के बड़े नेता सहमत नहीं थे...

क्रमशः

पाथेय कण
16-30 अप्रैल, 2022
(10 अप्रैल को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

वैशाख शुक्ल पक्ष, वि.सं.-2079
(1 से 16 मई, 2022)

जन्म दिवस

वैशाख शु.1(1 मई) – दूसरे गुरु अंगद देव जी जयंती (प्रा.मत)
वैशाख शु.1 (1 मई) – श्री कुन्थुनाथ जयंती (17वें तीर्थंकर)
वैशाख शु.3 (3 मई) – परशुराम जयंती , संत बसवेश्वर जयंती
वैशाख शु.5 (6 मई) – आद्य शंकराचार्य जयंती, भक्त सूरदास जयंती
वैशाख शु.6 (7 मई) – रामानुजाचार्य जयंती
7 मई (1861) – रवीन्द्रनाथ ठाकुर जयंती
वैशाख शु.13 (14 मई) – श्री नृसिंह जयंती
15 मई (1907) – क्रांतिकारी सुखदेव जयंती
वैशाख शु.14 (15 मई) – तीसरे गुरु अमरदास जयंती (प्रा.मत)
वैशाख पूर्णिमा (16 मई) – भगवान बुद्ध जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

7 मई (1924) – अल्लूरी सीताराम राजू की शहादत
8 मई (1899) – वासुदेव हरि चाफेकर का बलिदान
8 मई (1915) – मास्टर अमीरचंद, भाई बाल मुकुन्द तथा अवध बिहारी की शहादत
10 मई (1899) – महादेव रानाडे की शहादत
12 मई (1899) – बालकृष्ण हरि चाफेकर का बलिदान
16 मई (1665) – मुरार बाजी देशपांडे की वीरगति

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

1 मई – अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस (मजदूर दिवस)
3 मई – विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस
8 मई – विश्व रेडक्रॉस दिवस
वैशाख शु.7 (8 मई) – विजय नगर साम्राज्य की स्थापना (सन् 1336)
10 मई (1857) – अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम स्वतंत्रता संग्राम शुरु
11 मई – राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
11 मई (1951) – सोमनाथ मंदिर की पुनर्प्रतिष्ठा
वैशाख शु. 10 (11 मई) – तीर्थंकर महावीर को कैवल्य ज्ञान
12 मई – अन्तरराष्ट्रीय नर्स दिवस
13 मई (1998) – भारत परमाणु-शक्ति सम्पन राष्ट्र बना

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

3 मई – अक्षय तृतीया (आखा तीज)
16 मई – पीपल पूनम

पंचांग- वैशाख (शुक्ल पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944
(1 से 16 मई, 2022)

अक्षय तृतीया- 3 मई, **रोहिणी (जैन) व्रत**- 3 मई, **विनायक चतुर्थी व्रत**-4 मई, **गंगा सप्तमी**- 8 मई, **जानकी नवमी**-10 मई, **प्रदोष व्रत**- 13 मई, **चांद पूर्णिमा व्रत**-15 मई, **पीपल पूनम (सत्यनारायण व्रत)**- 16 मई

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 1 मई **मेष** राशि में, 2 से 4 मई उच्च की राशि **वृष** में, 5 से 7 मई **मिथुन** राशि में, 8-9 मई स्वराशि **कर्क** में, 10-11 मई **सिंह** राशि में, 12 से 14 मई **कन्या** राशि में तथा 15-16 मई **तुला** राशि में गोचर करेंगे।

वैशाख शुक्ल पक्ष में **गुरु** व **शुक्र** पूर्ववत मीन राशि में तथा **शनि** व **मंगल** पूर्ववत कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः मेष व तुला राशि में यथावत बने रहेंगे। **सूर्य** 14 मई को सायं 5.30 बजे मेष से वृष राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** यथावत वृष राशि में रहते हुए 10 मई को सायं 5.20 बजे वक्री होंगे।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- भारतीय अर्थव्यवस्था में बन रहे हैं नित नए कीर्तिमान
  https://patheykan.com/?p=15143
- भगवान झूलेलाल का अवतरण हिंदू धर्म की रक्षा हेतु हुआ था
  https://patheykan.com/?p=15095
- आर्यों के आक्रमण का सिद्धांत-एक भ्रम
  https://bit.ly/3r626C3

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
संपादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 अप्रैल, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में